प्रकाशन तिथि : 15 फरवरी, 2020
प्रेषण तिथि : 19 फरवरी 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 23 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'चुनाव जीतना पर्याप्त नहीं है, आगे बहुत करना शेष'

सरपंच का चुनाव आप जीते हैं, उसके लिए बधाई लेकिन चुनाव जीतना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि इसके आगे बहुत करना शेष रहता है, गांव के लिए बहुत करना है, समाज और राष्ट्र के लिए बहुत करना है। यह कौन समझ सकता है? जिसने अपने जीवन का अर्थ समझा है वही समझ सकता है। जो अपने देश से, अपने प्रदेश से, अपने गांव से, अपने समाज से, अपनी कौम से प्रेम करता है वही

समझ सकता है। 7 फरवरी को जोधपुर जिले की रणसीगांव पंचायत के सरपंच सवाई सिंह के अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हम अपने आप से, अपने परिवार से, अपने ग्राम से, इंसानियत से जो प्रेम करते हैं उस प्रेम की यह मांग है कि हम जो संसार से अपेक्षा करते हैं वह संसार के लिए करें। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

राव देवराज जी की 658वीं जयंती मनाई

शेरगढ़ (जोधपुर) क्षेत्र के बावकान तालाब (सेतरावा) में प्रतिवर्ष की भांति राव देवराज जी की 658वीं जयंती 10 फरवरी को समारोह पूर्वक मनाई गई। समारोह को संबोधित करते हुए रामविचार जी महाराज ने कहा कि वर्तमान में कलम युग निर्माण का साधन है। इसलिए क्षत्रियों को राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने के लिए अपनी शक्ति को पहचान कर युगानुकूल साधन से अपनी भूमिका निभानी होगी। उन्होंने ऐसा काम करने का आह्वान किया ताकि इतिहास में नाम अंकित किया जा सके। प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य उम्मेदसिंह ने समारोह स्थल के विकास हेतु राज्य सरकार तक प्रस्ताव भिजवाने का वादा किया। पूर्व विधायक बाबूसिंह राठौड़, शंभूसिंह खेतासर, हनुमानसिंह खांगटा, रविन्द्रसिंह भाटी, कल्याणसिंह राठौड़, भगवानसिंह राठौड़ आदि ने राव देवराज जी के जीवन मूल्यों का अनुसरण करने, कुरीतियों को त्यागने, वर्तमान समय की विकृतियों से दूर रहने आदि विषयों पर अपनी बात कही।

कार्यक्रम में राजस्थानी विषय में स्नातकोत्तर परीक्षा में स्वर्ण पदक हासिल करने वाले मदनसिंह सोलंकियातला, नवनिर्वाचित सरपंच रामसिंह सुवालिया, चन्द्रकंवर देवराजगढ़, पूरण कंवर शेरगढ़ सहित देवराज समाज की विशिष्ट प्रतिभाओं व प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। राव देवराज हितकारिणी सभा के अध्यक्ष कल्याणसिंह ने अपनी तरफ से एक लाख रुपए के सहयोग की घोषणा करते हुए देवराज स्मारक के पास पोळ निर्माण करवाने के लिए समाज के लोगों से सहयोग का आग्रह किया। इस बार का आयोजन देवलिया गांव की तरफ से किया गया। आगामी वर्ष की जिम्मेदारी नाथड़ाऊ ने ली।

खन्नीपुरा में उग्रसेन जयंती समारोह संपन्न

जयपुर के निकट खन्नीपुरा गांव स्थित जमवाय माता मंदिर में 9 फरवरी (रविवार) को शेखावत उग्रसेन समिति राजस्थान की तरफ से उग्रसेन जी की 445वीं जयंती मनाई गई। जयंती समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह महरोली ने कहा कि महाराव शेखा जी के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें उनके जीवन मूल्यों को आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने अपने मंत्रालय द्वारा इस क्षेत्र के पानी के संकट को दूर करने के लिए किए जा रहे प्रयासों से भी अवगत करवाया। समारोह की अध्यक्षता कर रहे पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह ने कहा कि देश में हो रहे बदलाव में हमारा महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। आज जमाना तलवार का नहीं बल्कि कलम का है। हमें युगानुकूल साधन अपना कर आगे बढ़ना चाहिए। पुलिस महानिरीक्षक वी.के. सिंह ने कहा कि कि बेटियां समाज की अमूल्य धरोहर हैं, इन्हें सहेज कर रखना समाज की जिम्मेदारी है। लिंग भेद के कारण बेटियों की संख्या में हो रही गिरावट हम सबके लिए चिंता का विषय है। इसके अलावा समारोह को मगनसिंह नाथावत, संपतसिंह शेखावत, न्यायाधीश शक्तिसिंह, दातार सिंह, देवीसिंह, राजेन्द्रसिंह, करणसिंह आदि अनेक लोगों ने संबोधित किया। समारोह से पूर्व 101 मोटर साइकिल की रैली निकाली गई। कार्यक्रम में नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों का सम्मान किया गया।

सज्जनसिंह जी राजस्थली की चिर विदाई

●अजीतसिंह धोलेरा

गुजरात के गोहिलवाड़ प्रांत के राजस्थली (तहसील उमराला) गांव के श्री सज्जनसिंह जी गोहिल

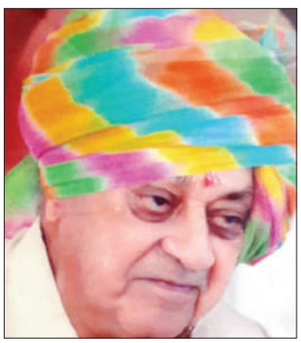

का 7 फरवरी को देहावसान हो गया। आप श्री गुजरात में श्री क्षत्रिय युवक संघ का शुभारम्भ कराने वाले में से एक थे। स्व. पूज्य हरिसिंह जी बापू गढुला के साथ आप राजस्थान में चल रहे भू-स्वामी आंदोलन में सहयोग देने के लिए राजस्थान पधारे थे। पूज्य तनसिंह जी एवं श्रद्धेय आयुवानसिंह से मिले। संघ प्रवृत्ति का परिचय प्राप्त हुआ और गुजरात में भी ऐसी प्रवृत्ति के लिए पधारने की प्रार्थना की। संघ का प्राथमिक परिचय देने के लिए श्री आयुवानसिंह जी गुजरात के दौरे पर पधारे। उस दौरे में आप साथ रहे।

भावनगर राजपूत छात्रावास में श्री आयुवान सिंह जी ने संघ का परिचय दिया। दिवंगत महाराजा कृष्णकुमार सिंह जी साहब बहुत प्रभावित हुए और छात्रावास में ही शिविर रखने का निश्चय किया। तदनुसार 12 से 18 अक्टूबर 1957 का प्रशिक्षण शिविर लगा जो गुजरात में संघ का पहला शिविर था। उसमें और उसके बाद राजकोट प्रांत व कच्छ में लगे शिविरों में आप उपस्थित रहे थे। संघ को अपना जीवन कार्य मानकर संघ को समर्पित होने वाले आप गुजरात के प्रथम स्वयंसेवक थे। आप श्री गोहिलवाड़ के गृहपति (वार्डन) भी रहे थे। आप अच्छे अध्ययनशील थे। पत्रिकाओं में समाजोपयोगी लेख लिखते रहते थे। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

सितंबर 1962 में रतनगढ़ में संघ का एक विशेष शिविर होना था। पूज्य श्री दिल्ली से रेल द्वारा रतनगढ़ के लिए रवाना हुए। उनके साथ एक स्वयंसेवक भी दिल्ली से साथ ही रवाना हुए। मार्ग में और स्वयंसेवक भी उसी रेल में चढ़े। रेल रात्रि 9 बजे रतनगढ़ पहुंची। स्टेशन पर आयोजक मिले और उन्होंने जिन्हें भोजन करना है, उन्हें निकट के होटल में चलने को कहा। लेकिन पूज्य श्री होटल में जाने की अपेक्षा शिविर स्थल की ओर रवाना हुए। जो स्वयंसेवक दिल्ली से उनके साथ आए थे वे भी उनके पीछे-पीछे चल पड़े। स्टेशन से काफी दूर निकल जाने के बाद पूज्य श्री ने पीछे मुड़कर देखा और उन स्वयंसेवक को अपने पीछे चलते पाया तो रुक गए। पास आने पर उन्हें शिविर स्थल पर जाने का संकेत किया एवं स्वयं वापिस स्टेशन की तरफ मुड़ गए। वे स्वयंसेवक शिविर स्थल पहुंच कर अपना बिस्तर खोलकर लेट गए और पूज्य श्री का इंतजार करने लगे। दिन भर की थकान के कारण उन्हें नींद आ गई और पूज्य तनसिंह जी कब आए उन्हें ध्यान ही नहीं रहा। सुबह उठने पर उन्हें पता चला कि पूज्य श्री रात को उनके लिए भोजन लेने वापिस गए थे और वे भोजन लेकर आए तब तक उन्हें नींद आ गई थी। इसलिए जगाया नहीं। यह है नेता और कार्यकर्ता का आदर्श संबंध। पूज्य श्री ने अपने पीछे चलने वाले लोगों को कभी अनुचर नहीं बल्कि सहचर ही माना। उनका अपने साथ चलने वालों के साथ नेता और कार्यकर्ता का औपचारिक संबंध नहीं था बल्कि अनौपचारिक पारिवारिक संबंध था। यही कारण था कि वे अपने साथ वालों को अपने हृदय में स्थान देते थे और परिणामतः आज वे अनेक हृदयों के स्वामी है। उनके व्यवहार में माता का वात्सल्य एवं पिता का दायित्व दोनों समाहित थे। उनमें गुरु का गुरुत्व व सखा जैसा हास परिहास दोनों समाहित थे और यथायोग्य दोनों का उपयोग अपने साथ चलने वालों के निर्माण के लिए किया करते थे। जो लोग उनके उस व्यक्तित्व में डुबकी लगा पाए उन्हें जीवन पथ पर अग्रसर होने का तरीका मिल गया और वे सभी उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर स्वयं को कृतार्थ समझते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ आज भी उनके द्वारा स्थापित उस पारिवारिक भाव के बल पर निरन्तर गतिमान है।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

CAT (कॉमन एडमिशन टेस्ट)

विगत अंक में हमने MAT परीक्षा के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जिसके माध्यम से MBA कोर्स में प्रवेश मिलता है। इस अंक में हम CAT अर्थात कॉमन एडमिशन टेस्ट के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करेंगे। यह परीक्षा देश के प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान - IIM (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट) में MBA (मास्टर्स इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) कोर्स में प्रवेश प्रदान करने हेतु आयोजित की जाती है। IIM के अतिरिक्त अन्य प्रबंधन विद्यालय (बिजनेस स्कूल) भी इस परीक्षा के स्कोर के आधार पर प्रवेश प्रदान करते हैं। इस समय देश में 20 IIM कार्यरत है। इन्हीं में से अलग-अलग IIM द्वारा यह परीक्षा बारी-बारी से आयोजित की जाती है। यह वर्ष में एक बार आयोजित होती है। यह MAT की अपेक्षा अधिक कठिन तथा प्रतिष्ठित परीक्षा मानी जाती है।

योग्यता : CAT परीक्षा में बैठने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता स्नातक अथवा समकक्ष है जिसमें न्यूनतम 50 प्रतिशत प्राप्तांक होना अनिवार्य है। इस परीक्षा हेतु आयुसीमा का कोई बंधन नहीं है। स्नातक अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रहे अभ्यर्थी भी CAT परीक्षा में भाग ले सकते हैं। सामान्य श्रेणी के अभ्यर्थी हेतु 1900 रुपये आवेदन शुल्क है।

यह परीक्षा ऑनलाइन तरीके से आयोजित होती है। CAT परीक्षा की अवधि तीन घण्टे की होती है। इसमें बहुवैकल्पिक तथा रिक्त स्थान की पूर्ति वाले दोनों प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्नपत्र के तीन प्रभाग होते हैं-

(i) वर्बल एबिलिटी एंड रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन
(ii) क्वांटिटेटिव एबिलिटी
(iii) लॉजिकल रीजनिंग एंड डेटा इंटरप्रेटेशन

परीक्षा पूर्णत अंग्रेजी माध्यम में आयोजित होती है। प्रथम दो प्रभाग से 34-34 प्रश्न तथा तृतीय प्रभाग से 32 प्रश्न, इस प्रकार कुल 100 प्रश्न पूछे जाते हैं। बहुवैकल्पिक प्रश्न के गलत उत्तर के लिए नकारात्मक अंकन होता है किन्तु रिक्त स्थान की पूर्ति वाले प्रश्नों में गलत उत्तर हेतु कोई नकारात्मक अंकन नहीं होता है।

नोट- परीक्षा योजना में प्रतिवर्ष कुछ बदलाव भी संभावित होते हैं अतः तैयारी प्रारम्भ करने से पूर्व जानकारी को अद्यतन अवश्य कर लेवें।

क्रमशः

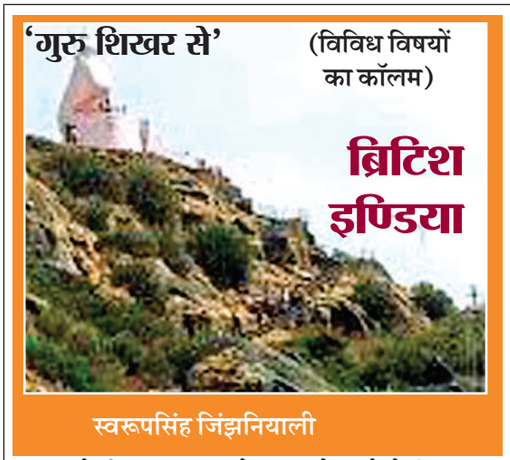

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

अंग्रेजी शासन काल में भारत दो भागों में विभक्त था। पहला भाग ब्रिटिश प्रान्तों के रूप में था जिस पर सीधा अंग्रेजों का अधिकार चलता था वह ब्रिटिश भारत कहलाता था। जबकि दूसरा भाग देशी राज्यों के रूप में रियासती भारत कहलाता था। 1 अप्रेल 1937 को बर्मा (म्यानमार) को भारत से अलग कर नए देश का दर्जा दे दिया गया। 15 अगस्त 1947 तक पाकिस्तान एवं बंगलादेश भी भारत के हिस्सा थे। ब्रिटिश भारत 11 प्रांतों में बंटा हुआ था। मद्रास, बम्बई, बंगाल, पंजाब, बिहार, असम, युनाईटेड प्रिविंसेज (यू.पी. वर्तमान का उत्तरप्रदेश), सेन्ट्रर्स प्रिविंसेज (मध्य भारत) नोर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंसेज अफगानिस्तान से लगता वर्तमान पाकिस्तान के पेशावर वाला इलाका तथा उड़ीसा एवं सिंध इसके हिस्से थे। इसके अतिरिक्त दिल्ली, अजमेर, मेरवाड़ा, कुर्ग (वर्तमान का कर्नाटक का इलका, अण्डमान द्वीप तथा ब्रिटिश बलुचिस्तान एजेन्सी (अब पाक में) को इसमें शामिल रखा गया था। इम्पिरियल गजट में 1907 में भारतीय रियासतों की संख्या 693 दी गई है। रियासतों की संख्या समय-समय पर घटती-बढ़ती रही है। आजादी के समय रियासतों की संख्या 565 थी। ब्रिटिश भारत का भाग पूर्णतः केन्द्र की अंग्रेज सरकार के अधीन था जबकि देशी रियासतें ब्रिटिश सरकार की देखरेख के बावजूद स्वतंत्र स्थिति में थी। अंग्रेजी सत्ता एवं रियासतों के शासकों के मध्य तालमेल बनाने के लिए भारतीय रियासतों के महाराजा व नवाब शासकों का एक संगठन 1921 में नरेन्द्र मण्डल (चैम्बर ऑफ प्रिंसेज) के नाम से बनाया गया जो देश की आजादी तक सक्रिय रहा। नरेशों की इस संस्था के पहले अध्यक्ष (चांसलर) बीकानेर महाराजा गंगासिंह बने। यह संस्था हर वर्ष दिल्ली में अपना सम्मेलन करती थी जिसकी अध्यक्षता ब्रिटिश वायसराय करता था। नरेन्द्र मण्डल की स्थापना से भारतीय रजवाड़ों के संबंध में अब तक चली आ रही ब्रिटिश नीति में (रजवाड़ों को एक-दूसरे से अलग-थलग रखने की) अंग्रेजी चालों में बड़ा परिवर्तन हुआ। नरेन्द्र मण्डल ने भारतीय शासकों को एक साथ बैठने तथा एक आवाज में बोलने का अवसर प्रदान किया। बीकानेर, अलवर, पटियाला आदि के शासकों ने नरेन्द्र मण्डल की एकता को आगे बढ़ाने में भरसक प्रयास किए ताकि भारतीय राजाओं, भारतीय प्रजा व ब्रिटिश सरकार के मध्य अच्छा तालमेल बना रहे। परन्तु विडम्बना कि कुछ बड़ी रियासतों यथा हैदराबाद, कश्मीर, बड़ौदा, मैसूर, ट्रावल कारे, कोचीन, इन्दौर आदि ने नरेन्द्र मण्डल में रुचि नहीं दिखाई। इंग्लैण्ड में हुए गोलमेल सम्मेलनों (राउण्ड टेबल कांफ्रेन्स) में नरेन्द्र मण्डल के सदस्यों का वर्चस्व रहा।

जांबाज तहसीलदार का दायित्व बोध

भीलवाड़ा जिले की कोटड़ी तहसील की जीवा खेड़ा ग्राम पंचायत में एक व्यक्ति की कुएं में गिरने से मौत हो गई। जहरीली गैस के डर से बचाव दल के सदस्यों ने कुए में उतरने से मना कर दिया तब वहां पद स्थापित तहसीलदार मुकन्द सिंह शेखावत ने स्वयं कुएं में उतर कर शव को निकालकर दायित्व बोध का अनूठा उदाहरण पेश किया। तहसीलदार के इस दायित्व बोध की चहुंओर प्रशंसा हो रही है।

(पृष्ठ एक का शेष)

सज्जनसिंह...

पत्राचार के अनुकरणीय कार्य में आप शिष्टबद्ध थे। आए हुए पत्र का तुरन्त अपने सुंदर हस्तलेखन में अवश्य प्रत्युत्तर देते थे। पिछले कुछ वर्षों से आप अपने गांव में ही रहते थे। उम्र हो गई थी, स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा था। माननीय संघ प्रमुख श्री जब भी इनके गांव की तरफ पधारते, आपसे अवश्य मिलने जाया करते थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों के एक प्रेरक व मार्गदर्शक एवं गुजरात के राजपूत समाज को एकर संघिष्ठ व समर्पित कार्यकार की सदा ही अनुपस्थिति अखरेगी। परम कृपालु परमात्मा सद्गत की आत्मा को चिर शांति प्रदान करें और संघ परिवार व समाज को आपके निर्धारित किए हुए मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा आपकी आत्मा से मिलती रहे यही प्रार्थना है।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय

गोपालसिंह मूंगेरिया

पुत्र श्री भवानीसिंह मूंगेरिया

का भारतीय रेलवे में कनिष्ठ अभियंता के पद पर चयन होने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : डॉ. स्वरूपसिंह मूंगेरिया, दौलतसिंह मूंगेरिया,
उदयसिंह मूंगेरिया व डॉ. विक्रमसिंह मूंगेरिया
तथा समस्त स्वयंसेवक
श्री हणवंत हॉस्टल शाखा, जोधपुर।

संपादकीय

विविधता, सुन्दरता और एकता

बाड़मेर में 12 जनवरी को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि प्रकृति ने अपने आपको विविध रूपों में अभिव्यक्त किया है और उसकी यह विविध अभिव्यक्ति ही सुन्दरता पैदा करती है। उन्होंने कहा कि यदि इस सृष्टि में सब नीम ही नीम के पेड़ होते तो क्या यह प्रकृति सुन्दर नजर आती। इस प्रकार यह विविधता ही प्रकृति को सुन्दर बनाती है। ऐसे में हम सबके मन में प्रश्न उठ सकता है कि जब विविधता में सुन्दरता होती है तो क्या एकता में सुन्दरता नहीं होती? हमारे यहां तो एकता को उपास्य माना जाता है। एकता को प्राप्य माना जाता है और सब एकता के लिए प्रयास करते हैं तो फिर हमारे लिए वरैण्य एकता हो या विविधता? हम तो बचपन से पढ़ते और सुनते आए हैं कि हम सबको एक होना है। एकता में ही शक्ति होती है और एक होने के लिए हमें विविधता को समाप्त करना चाहिए। ऐसे में हमारे सामने एक अन्य प्रश्न भी होना चाहिए कि क्या विविधता को समाप्त करना संभव है? तो वास्तव में जब तक हम प्रकृति की सीमाओं में हैं तब तक विविधता को समाप्त करना संभव नहीं है। एक प्रकार से विविधता इस प्रकृति की विशेषता है और वह विविधता ही इसे वरैण्य बनाती है। विविधता ही इस प्रकृति की अभिव्यक्ति को सुंदर बनाती है। प्रकृति में इतनी अधिक विविधता है कि इसमें एक चीज जैसी बनी, एक दम उसी के समान दूसरी चीज नहीं बनाई जा सकती। प्रकृति द्वारा बनाई गई हर वस्तु अद्वितीय होती है और उसका अद्वितीय होना ही उसकी सुन्दरता होती है। प्रकृति का हम गहनता से निरीक्षण करें तो हर पत्ती भी अपने आपमें अद्वितीय होती है। प्रकृति द्वारा बनाई गई हर वस्तु का अद्वितीयपना ही उसकी सुन्दरता होती है। उसका प्रकटीकरण, उसकी विविधता ही इस संसार में सुन्दरता का समावेश करता है। उसे रसमय बनाता है। उसका विस्तार करती है। लेकिन इस विविधता के साथ-साथ प्रकृति में साम्यता भी होती है। हर अद्वितीय वस्तु का अन्य वस्तु से किसी न किसी प्रकार का साम्य भी होता है। वहीं साम्यता समूह बनाती है। जैसे एक पेड़ की सभी पत्तियों अपने आप में अद्वितीय होते हुए भी उनमें एक समानता है कि वे उक्त पेड़ की पत्तियां है और यही तत्व उनको एकता के लिए प्रेरित करता है। यहां से प्रकृति की विविधता अपने आप में व्याप्त एकता का अनुभव कराती है। जैसे हम सब अपने आप में आकार, प्रकार, स्वभाव आदि में अद्वितीय होते हुए भी इस बात में एकता अनुभव करते हैं कि हम राजपूत है। यह रजपूती ही वह तत्व हुआ जो हम विभिन्न राजपूतों को एकता का अहसास करवाती है। लेकिन इस एकता में भी विभिन्नता समाई हुई है। वह यह है कि हम राजपूत हैं इसीलिए राजपूत के रूप में एक बनें और ऐसे में ब्राह्मण, वैश्य आदि से अलग रहेंगे। इस प्रकार हमारा यह अहसास जहां एक प्रकार के एक्य का अहसास करवाता है वहीं दूसरे प्रकार की भिन्नता का भी अहसास करवाता है। यह विभिन्नता का अहसास भी प्रकृति जन्य विविधता है और इसकी भी अपनी सुन्दरता है। विभिन्न प्रकार की पूर्वज परम्पराओं की पहचान जातियों के रूप में इसी सुन्दरता की द्योतक हैं। इस प्रकार की एकता एवं विविधता सभी स्तरों पर पाई जाती है। एक राष्ट्र के रूप में हमारी राष्ट्रीयता जहां हमें एकता का अहसास कराती है वहीं यह राष्ट्रीयता हमें अन्य राष्ट्रों से पृथकता का अहसास करवाती है। यही विविधता और एकता जब मानव एवं मानवेत्तर प्राणियों के स्तर पर जाती है तब भी इस एकता एवं विविधता दोनों का दर्शन करवाती है। जब यह जड़ और चेतन के स्तर पर आती है तो वहां भी एकता और विविधता दिखाई देती है। इस प्रकार यह एकता जहां सुन्दरता का अहसास करवाती है वहीं विविधता भी सुंदरता का अहसास करवाती है। एक इकाई से लेकर ज्यों-ज्यों हम उत्तरोत्तर आगे बढ़ते जाते हैं, सूक्ष्म विविधता स्थूल दिखाई देती है लेकिन हर स्तर पर बनी हुई है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति के स्तर पर विविधता को समाप्त नहीं किया जा सकता। किसी एक क्षेत्र में विविधता को समाप्त करने का प्रयास करेंगे तो यह दूसरे क्षेत्र या दूसरे स्तर पर प्रकट हो जाएगी। ऐसे में भी हमारी एकता की चाह बनी रहती है, सब प्रकार की विविधता के अहसास के बावजूद वह चाह मिटती नहीं है क्यों कि वह चाह तात्विक एकता की चाह होती है। एक ऐसा तत्व जो इस पत्ती में भी है और उस पत्ती में भी। इस पेड़ में भी है और उस पेड़ में भी। इस व्यक्ति में भी है और उस व्यक्ति में भी। इस जाति में भी है और उस जाति में भी। इस राष्ट्र में भी है और उस राष्ट्र में भी। मानव में भी है और मानवेत्तर प्राणियों में भी। जड़ में भी है तो चेतन में भी। प्रकृति में भी है और प्रकृति से परे भी। वही एकता इकाई की वास्तविक भूख होती है। उसी एकता के लिए इकाई क्रमशः समूह, जाति, राष्ट्र आदि की यात्रा करते हुए मूल तत्व की ओर अग्रसर होता है जो सम्पूर्ण प्रकृति में विद्यमान है और प्रकृति के परे भी विद्यमान रहता है। उसी तत्व से एक रूप होने की चाह ही मूलरूप में एकता की चाह है और यही अंतिम रूप से तात्विक एकता कहलाती है जिसकी उपासना सदा से भारत करता रहा है। उस तात्विक एकता से पूर्व की सभी एकताएं विविधता की ही पोषक है और प्रकृति के क्षेत्राधिकार में रहने तक यह विविधता ही सुन्दरता की पोषक होती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन सभी विविधताओं से गुजरते हुए उस तात्विक एकता का अहसास करवाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

खरी-खरी

'आइये स्वयं के प्रति कट्टर बनें'

विगत अंक में हमने पढ़ा कि कट्टरता जड़ता लाती है। लेकिन वही कट्टरता उपयोगी भी होती है जब वह अपने आपके प्रति हो। यह अपने आपके प्रति कट्टरता क्या होती है और यह किस प्रकार जड़ता नहीं लाती यही विचारणीय एवं वरैण्य है। कट्टरता और एक निष्ठता मिलते जुलते से शब्द हैं और हमने विगत अंक में विश्लेषण किया था कि एक निष्ठता लक्ष्य के प्रति होनी चाहिए, प्रक्रिया के प्रति नहीं। मंजिल के प्रति होनी चाहिए मार्ग के प्रति नहीं। मंजिल को पाने के लिए मार्ग बताया जाता है और उस मार्ग पर चलने वाले के लिए कुछ विधि निषेध तय किए जाते हैं। उन विधि निषेधों के प्रति मार्ग पर चलने वाले की कट्टरता उसे उस मार्ग पर आगे बढ़ाती है एवं मंजिल से दूरी घटाती है। इस प्रकार यह कट्टरता उस व्यक्ति के स्वयं के प्रति होती है। उन विधि निषेधों के प्रति उसकी स्वयं की वह कट्टरता अपनी मंजिल के प्रति उसकी निष्ठा को बढ़ाती है इसलिए ऐसी कट्टरता को वरैण्य कहा गया है। लेकिन यदि वह अपनी उस कट्टरता को अन्यों पर थोपना चाहे तो वह अपना कार्य क्षेत्र सीमित करता है। लोक सम्पर्क, लोक शिक्षण एवं लोक संग्रह को साधन मानकर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाले व्यक्ति को अधिकतम लोगों से परस्पर क्रिया करनी पड़ती है। ऐसे में यदि वह स्वयं के प्रति कट्टर बनने की अपेक्षा अन्यों से कट्टर बनने की अपेक्षा करता है तो अपनी उस परस्पर क्रिया की बुनियाद ही मिटाता है क्यों कि जो वह स्वयं नहीं कर सकता उसकी अपेक्षा दूसरों से करता है। लेकिन वह स्वयं तो कट्टर है और चाहता है कि सामने वाला भी ऐसा ही हो तो वह अपनी परस्पर क्रिया के क्षेत्र को सीमित करता है, स्वयं अपना कार्य क्षेत्र सीमित करता है। ऐसे में उसे उस स्थिति के बारे में सोचना चाहिए जिस स्थिति में वह स्वयं प्रथम बार उक्त मार्ग के प्रति आकर्षित हुआ था।

उदाहरण के लिए किसी साधना मार्ग पर निर्बाध गति से बढ़ने के लिए खान-पान के कुछ विधि निषेध तय किए गए हो और उस मार्ग पर चलने वाले से यह अपेक्षा की गई हो कि वह उन विधि निषेधों के अनुरूप ही अपने खान-पान को निश्चित करे। ऐसे में स्वयं के प्रति कट्टरता की मांग तो यह है कि वह कट्टरता पूर्वक उन विधि निषेधों का पालन करें। लेकिन यदि वह स्वयं ऐसा नहीं करता और अन्यों से अपेक्षा करता है तो उसे ऐसा अधिकार ही नहीं है क्यों कि वह स्वयं ही मार्ग पर नहीं है लेकिन यदि वह स्वयं सबका पालन करता है और उससे परस्पर क्रिया करने वाले व्यक्ति के लिए भी यह शर्त लगा दे कि वह उसी व्यक्ति से सम्पर्क रखेगा जो उक्त विधि निषेधों का पालन करते हैं तो उसने अपने आपका क्षेत्र सीमित कर लिया क्यों कि वह तो उक्त मार्ग पर आया है, उसे पर्याप्त निर्देशन मिला है लेकिन जो अभी उस मार्ग पर आया ही नहीं है उससे ऐसी अपेक्षा करना संबंधित के उस मार्ग पर आने के मार्ग अवरुद्ध करना है। इसीलिए यहां उन विधि निषेधों के प्रति स्वयं की कट्टरता को जारी रखते हुए अन्यों के प्रति उदार होने की आवश्यकता रहती है। लेकिन यहां एक बड़ी फिसलन उपलब्ध हो जाती है। अन्यों के प्रति उदारता को हम अपने आपके प्रति उदारता में तब्दील कर लेते हैं। यह फिसलन हमें अन्यों को मार्ग पर लाने की अपेक्षा स्वयं मार्ग से हटने को प्रेरित करती है और हम इस मुगालते में रहते हैं कि यह सब हम हमारे साथियों को हमारे मार्ग पर लाने के लिए कर रहे हैं। शनैः शनैः हम उन्हें अपने मार्ग पर नहीं ला पाते बल्कि स्वयं उनके मार्ग पर चले जाते हैं और इस प्रकार अपना व उनका दोनों का बेड़ा गर्क कर देते हैं। इस प्रकार समष्टि गत साधना का मार्ग दोहरी सावधानी का मार्ग होता है। इसमें निरन्तर अंदर और बाहर सामंजस्य बना कर चलना होता है। निरन्तर अपने आपको तोलते रहना पड़ता है। अपने आपके ठीक होने के अहंकार बहुत घातक अहंकार होता है और यह हमारी समष्टिगत साधना को क्षीण ही नहीं करता बल्कि हमारे समष्टिगत कार्य क्षेत्र को सीमित कर हमें पंगू बना देता है वहीं संसार की चकाचौध के साथ कदम न मिला पाने की हीन भावना इससे भी अधिक घातक होती है। वह हमें ही मार्ग से विरत कर शुन्य पर ला पटकती है। इसीलिए इन सबमें संतुलन के लिए निरन्तर स्वयं के अध्ययन की आवश्यकता है। स्वयं के प्रति कट्टर होने की आवश्यकता है वहीं अन्यों के प्रति उदार होने की भी उतनी ही आवश्यकता है। इसी संतुलन का शिक्षण है श्री क्षत्रिय युवक संघ।

जोधपुर शहर की शाखाओं का भ्रमण

9 फरवरी, जोधपुर। शहर के कोलाहल से दूर शान्त प्राकृतिक स्थान पर दिन व्यतीत करना, बहुत रोमांचित करने वाला था। प्रातः 10 बजे तक सभी शाखाओं के स्वयंसेवक अपने-अपने शिक्षण प्रमुखों के साथ विभिन्न मार्गों से जोधपुर के पश्चिम में विस्तृत भू-भाग पर पहाड़ियों के बीच अवस्थित 'माचिया पार्क' पहुंच गए थे। दौड़ते, उछलते, आश्चर्य से अपने साथियों को बताते, विभिन्न जंगली जानवरों के प्राकृतिक आवास की जानकारी ले रहे थे। जोधपुर शहर की चार शाखाओं हणवन्त राजपूत छात्रावास (पावटा), जय भवानी नगर (बासनी), तनायन (नान्दड़ी) और पंचवटी छात्रावास (चौपासनी) के 120 स्वयंसेवक शामिल हुए। जलचर, स्थलचर और नभचर, शाकाहारी और मांसाहारी, शान्त और हिंसक सभी प्रकार के जीवों से परिचय के बाद आपस में परिचय के लिए एक जगह बैठने का आदेश हुआ। शाखानुसार परिचय किया गया। सभी ने अपने परिचय के साथ अपनी शाखा में क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं उसके बारे में विचार रखे।

दोपहर दो बजे संभाग प्रमुख श्री चन्द्रवीर सिंह देणोक और नरपतसिंह बस्तवा सबके लिए भोजन लेकर पहुंचे। सबने भोजन किया और दूसरे पाईन्ट सिद्धनाथ की ओर चल पड़े। खूबसूरत पहाड़ियों, झील और प्राकृतिक वनस्पति को निहारते घुमावदार रास्तों से मीलों का सफर पैदल ही कब पूरा हो गया पता ही नहीं चला। तखत सागर के पास ऊंची पहाड़ी पर स्थित 'सिद्धनाथ महादेव ' प्राचीन ऋषियों की तपोस्थली रही है। ऊंचे स्थान से सूर्यनगरी को निहारना अद्भुत था। इतना पैदल चलने के बाद भी थकान कहीं नजर ही नहीं आ रही थी। सूर्यदेव पश्चिम की ओर तेजी से बढ़ने लगे और हम पुनः शहर की ओर। घड़ी की सुईयां साढ़े पांच बजा रही थी, शाखानुसार संख्या लेकर सभी अपने-अपने घर को विदा हुए। पूरे कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक चैनसिंह बैठवास का सान्निध्य मिला। चन्द्रवीरसिंह देणोक, नरपतसिंह बस्तवा, भैरूसिंह बेलवा, भरतसिंह छापड़ा, लक्ष्मणसिंह गुडानाल, उदयसिंह सवाऊ, भगवानसिंह बेलवा, जितेन्द्रसिंह केतू, प्रभुसिंह देणोक, गुलाबसिंह बेदू ने व्यवस्था में सहयोग प्रदान

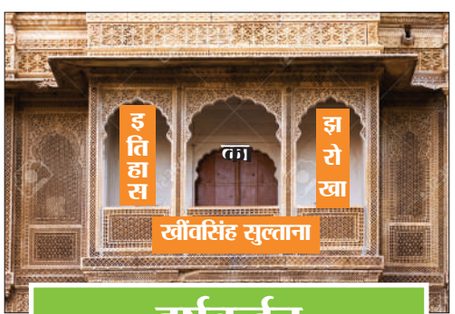

हर्षवर्द्धन

वर्तमान पंजाब और दिल्ली के भू-भाग पर बसा हुआ 'श्रीकण्ठ' प्राचीन काल का एक अत्यन्त समृद्धशाली जनपद था। थानेश्वर (हरियाणा के करनाल में) श्रीकण्ठ जनपद के अन्तर्गत एक छोटा सा प्रदेश था। छठी शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में थानेसर पर पुष्यभूति नामक (जो कि बैंस वंश से संबंधित था) एक साधारण से शासक ने अपना राज्य स्थापित कर वर्धन राजवंश की नींव रखी। अपने संस्थापक के नाम पर यह वंश पुष्यभूति वंश भी कहलाया। इस वंश के प्रारंभिक शासक किसी न किसी शासक के अधीनस्थ शासक के तौर पर राज्य कर रहे थे। इस वंश का प्रथम प्रतापी शासक प्रभाकरवर्द्धन था। उसने आसपास के राज्यों को जीत कर थानेश्वर राज्य का विस्तार कर एक स्वतंत्रत राज्य की स्थापनी की। प्रभाकरवर्द्धन के शासनकाल के अंतिम वर्षों में हूणों ने आक्रमण किया जिसका सामना करने के लिए उसने बड़े पुत्र राज्यवर्द्धन को भेजा, जिससे हूणों को बुरी तरह परास्त किया। हूणों पर विजय प्राप्त कर जब वह वापिस लौटा तो उसे अपने पिता की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ, इससे वह अत्यन्त दुःखी हुआ और संन्यासी बनने का निश्चय किया। परन्तु इसी समय उसे सूचना मिली कि मालवा के शासक ने उसके बहनोई ग्रहवर्मा की हत्या कर दी और राज्यश्री को कारागार में डाल दिया है। इस घटना ने उसे पुनः शस्त्र ग्रहण करने पर मजबूर कर दिया। उसने एक सेना लेकर मालवराज देवगुप्त को दण्डित करने के लिए प्रयाण किया। उसने हर्ष को राज्य व परिवार की सुरक्षा के लिए पीछे छोड़ा। उसने मालवराज देवगुप्त को युद्धभूमि में परास्त कर मार डाला लेकिन देवगुप्त के मित्र गौड़ नरेश (मध्य बंगाल का शासक) शशांक ने विवाह प्रस्ताव देकर छल से राज्यवर्द्धन की हत्या करवा दी। राज्यवर्द्धन की मृत्यु के विचलित हर्षवर्द्धन को उसके सेनापति सिंहनाद ने प्रेरित कर 606 ईस्वी में थानेश्वर के राज सिंहासन पर बैठाया। राज्य रोहण के समय हर्ष के समक्ष दो तात्कालिक समस्याएं थी। (1) अपने भाई की मृत्यु का बदला लेना। (2) राज्यश्री को कारागार से मुक्त करवाना। सोलह वर्षीय हर्ष ने इन विकट परिस्थितियों में पृथ्वी को गौंड़ो से रहित करने की प्रतिज्ञा ली। उसने तुरन्त सेना तैयार कर दिग्विजय के लिए प्रस्थान किया। प्रथम दिन की सायंकाल में कामरूप के शासक भास्कर वर्मा का दूत बहुमूल्य उपहार लेकर मैत्री का प्रस्ताव लेकर हर्ष के समक्ष प्रस्तुत हुआ। वहां से आगे चलने पर हर्ष को ज्ञात हुआ कि राज्यश्री विंध्याचल के जंगलों की ओर चली गई है। सेना को सेनापति भण्डि के नेतृत्व में छोड़ कर हर्ष राज्यश्री को ढूंढने के लिए निकल पड़ा। एक बौद्ध भिक्षुक की सहायता से राज्यश्री को ढूंढ कर हर्ष वापिस अपनी सेना से आ मिला। यहां से वह कन्नौज की ओर बढ़ा। शशांक बिना युद्ध कन्नौज से भाग गया। कन्नौज के राज सिंहासन पर हर्ष ने राज्यश्री को बैठाया जो हर्ष की सहायता से राज्य का संचालन करती थी। 612 ई. तक हर्ष लगातार युद्ध अभियानों में ही रहा और इस दौरान उसने समस्त उत्तर प्रदेश और बिहार के पश्चिम भाग के राज्यों को जीत कर अपने साम्राज्य में मिला लिया, मालवा के ऊपर भी हर्ष का अधिकार हो चुका था।

(क्रमशः)

श्री मारवाड़ महिला शिक्षण संस्थान का वार्षिकोत्सव

पाली जिले के खिमेल में स्थित श्री मारवाड़ महिला शिक्षण संस्थान खिमेल द्वारा संचालित वीर बाला राजपूत छात्रावास का वार्षिकोत्सव 9 फरवरी को आयोजित हुआ। कार्यक्रम में शिक्षाविद् डॉ. माधोसिंह इन्दा ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तखतसिंह चाणोद, पाबूसिंह राणावत, उम्मेदसिंह बढादपुरा (देवगढ़), चन्द्रपालसिंह बिरामी, समुन्द्रसिंह आकड़ावास, नारायणसिंह आकड़ावास, तखतसिंह पृथ्वीराज गुड़ा ने बालिकाओं के कॉलेज छात्रावास हेतु एक-एक कक्ष की घोषणा की। कार्यक्रम में बोर्ड मेरिट के आधार पर दशरथ कंवर, गरिमा देवड़ा व विष्णु सोलंकी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं को विदाई भी दी गई। समारोह के मुख्य अतिथि खेतसिंह बांकली थे व अध्यक्षता नारायणसिंह आकड़ावास ने की।

चुनाव जीतना...

(पृष्ठ एक का शेष) संघ प्रमुख श्री ने कहा कि भगवान के मंगलमय विधान से हमें मानव जीवन मिला है। इस मानव जीवन की कुछ मर्यादाएं हैं। अपने बच्चों, परिवार, गांव, समाज, राष्ट्र के प्रति उन मर्यादाओं को जो नहीं समझता उसका जीवन व्यर्थ है। इसलिए मैं कहता हूं कि सरपंच बनना भी बहुत बड़ी बात है लेकिन पर्याप्त नहीं है। इतने दिन एक दौड़ में शामिल रहकर यहां पहुंचे हैं तो अब ऐसी जगह पहुंचे कि लोग आपका अनुकरण करने को विवश हो जाएं। उन मर्यादाओं का पालन करें अन्यथा आपकी स्थिति का संसार को लाभ नहीं मिलेगा। उन मर्यादाओं का पालन न करना पाप होगा और पाप का परिणाम अच्छा नहीं होता। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि भागम भाग में मूल्यवान चीज पीछे न रह जाए, इस बात का विशेष ध्यान रखें। स्वामी रामसुखदास जी महाराज कहा करते थे कि यदि धन का सदुपयोग नहीं किया जाए तो वह मल से भी खराब होता है। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने जीवन को चार भागों में बांटा था। आप आज तक अपने लिए जीए, अब समाजोन्मुख होवें। उसकी विशालता का ध्यान रखें। अच्छा काम करने वाला व्यक्ति कभी मरता नहीं बल्कि अमर होता है इसलिए मेरी शुभकामनाएं है कि आप अच्छे काम करें एवं अमर होवें। उल्लेखनीय है कि सवाईसिंह बिलाड़ा पंचायत समिति में सर्वाधिक मतों से विजयी हुए एवं उनके अभिनंदन समारोह में ग्रामवासियों के साथ साथ आसपास के सैंकड़ों लोग भी उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

दिल्ली चुनाव परिणाम के मायने

दिल्ली चुनाव के परिणाम आ गए और पिछली बार की भांति दिल्ली की जनता ने आम आदमी पार्टी की झोली प्रचंड जीत से भरी। विगत चुनावों में दिल्ली की जनता ने नकारात्मक वोट करते हुए लंबे समय से रहे कांग्रेस शासन के खिलाफ वोट देते हुए आम आदमी पार्टी को उसका विकल्प चुना था वहीं इस बार दिल्ली की जनता ने भाजपा द्वारा नकारात्मक चुनाव प्रचार को नकार कर दिल्ली सरकार के काम पर सकारात्मक वोट किया है। दिल्ली को भारत का हृदय कहा जाता है। संपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व दिल्ली में है इसलिए यह चुनाव सम्पूर्ण भारत के मूड का प्रदर्शन कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विगत महीनों में हुए विभिन्न चुनावों में भाजपा राज्यों की सत्ता से बाहर होती जा रही है और उसी क्रम को दिल्ली ने बरकरार रखा है। जनता ने भाजपा नेतृत्व को यह संदेश दिया है कि विदेश नीति केन्द्र का विषय है इसलिए आप पाकिस्तान के नाम पर लोकसभा चुनाव में वोट मांग सकते हैं, विधानसभा चुनावों में नहीं। इसी प्रकार नागरिकता का विषय केन्द्र का विषय है इसका विधानसभा चुनाव से क्या लेना-देना? आप यदि धारा 370 को आधार बनाकर वोट मांगते है तो उसके लिए केन्द्र के चुनाव होंगे तब देखा जाएगा लेकिन विधानसभा चुनावों में तो उन विषयों पर चर्चा कीजिए जिनको भारतीय संविधान ने राज्य सूची में रखा है। आप शिक्षा पर बात करें, चिकित्सा पर बात करें, कानून एवं व्यवस्था पर बात करें, कृषि पर बात करें, बिजली और पानी की बात करें क्यों कि वे जिस विधानसभा को चुनने जा रहे हैं उसे इन्हीं विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है और उस विधानसभा से जो सरकार बनेगी उसे भी इन्हीं विषयों पर काम करना है। लेकिन क्या भाजपा नेतृत्व इस संदेश को समझ पा रहा है। यदि समझ पाता तो एक के बाद एक राज्य उसके हाथ से छिटकते नहीं जाते। लेकिन भाजपा से बड़ा संदेश तो दिल्ली की जनता ने कांग्रेस को दिया है। लगातार दो चुनावों में उसे शून्य पर रखने का अर्थ है कि जनता पांच वर्ष पहले की कांग्रेस और आज की कांग्रेस में कोई अंतर नहीं समझती है बल्कि उससे कमतर ही मानती है इसीलिए तो कांग्रेस का वोट प्रतिशत भी विगत विधानसभा चुनावों की अपेक्षा आशातीत रूप से घटा है। कांग्रेस के लिए सबसे बड़ा सबक स्वयं केजरीवाल हैं। उन्होंने बड़ी चतुराई से जनता के मानस को समझा और तद्नुसार अपने आपका बदला हुआ स्वरूप जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। इसीलिए मुख्यमंत्री बनते ही मोदी जी पर हर बात के लिए आक्रमण करने वाले केजरीवाल ने अपने आपको संभाल लिया और केन्द्र सरकार का अतार्किक विरोध करने की अपेक्षा अपने काम पर ध्यान केन्द्रित किया। दिल्ली की कानून व्यवस्था केन्द्र का विषय होने के कारण प्रारंभ में उप राज्यपाल से टकराव लेने का रास्ता अपनाया लेकिन कालांतर में टकराव की अपेक्षा जो स्वयं के हाथ में है उसे करने की ठानी और अच्छा करके भी बताया। क्या कांग्रेस केवल टकराव के भरोसे ही आगे बढ़ने का प्रयास करती रहेगी या केजरीवाल जी से सबक लेकर स्वयं के वश में जो है वह करना प्रारम्भ करेगी। एक सकारात्मक विपक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभाना प्रारम्भ करेगी। केजरीवाल जी ने समझा कि भारतीय जनता धर्म के मामले में संवेदनशील है और बहुसंख्यक हिन्दू समाज कांग्रेस की पंथ विशेष के प्रति आसक्ति को पसंद नहीं करता तो चुनावों में उन्होंने अपनी रणनीति बदली और पहुंच गए हनुमान मंदिर। उन्होंने अपनी सभाओं में हनुमान चालिसा का पाठ कर भाजपा के ध्रुवीकरण के प्रयास को नाकारा कर दिया। शाहीन बाग से पर्याप्त दूरी रखकर जनता में यह संदेश दिया कि यह कानून व्यवस्था का विषय है जो दिल्ली में केन्द्र के गृह मंत्रालय के अधीन है और वे कांग्रेस की तरह पंथ विशेष परस्त नहीं है बल्कि सबके प्रति समान है। क्या कांग्रेस इनसे सबक लेकर अपनी पंथ विशेष के प्रति आसक्ति छोड़कर अपने प्रारम्भ के काल की ओर लौट सकेगी जब उसके लिए भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रीयता विशेष सम्माननीय थी और वह उसके प्रति नमनशील थी। भाजपा ने जिस हथियार के भरोसे चुनाव लड़ना चाहा, केजरीवाल ने उसी हथियार का अपने पक्ष में उपयोग किया और सभी पंथ संप्रदायों के वोट लेकर सिरमौर बन गए। क्या कांग्रेस अपनी स्वीकार्यता को इस प्रकार बढ़ाने का प्रयास करेगी या पंथ विशेष के तुष्टिकरण के लिए बहुसंख्यकों की इसी प्रकार उपेक्षा करती रहेगी? साथ ही दोनों ही पार्टियों के लिए एक विशेष सबक इन चुनावों ने ओर दिया है। दोनों राष्ट्रीय पार्टियों का केन्द्रीय नेतृत्व सत्ता का केन्द्रीकरण अपनी मुट्ठी में इस हद तक करता रहा है कि अपनी ही पार्टी के दमदार राज्य नेतृत्व को किनारे करता रहा और अपने मर्जीदान नए लोगों को जनता पर थोपता रहा। इसका खामियाजा पहले कांग्रेस ने भोगा और अब भाजपा भोग रही है। ऐसे में सभी राजनीतिक दलों से यही अपेक्षा की जा सकती है कि जनता का निर्णय स्वीकार करने के अलावा उनके पास कोई उपाय नहीं है और जनता के अनुकूल बने बिना वे उस निर्णय को अपने पक्ष में नहीं कर सकते क्योंकि हर पांच वर्ष बाद जनता ही उसकी भाग्य विधाता होती है।

ऑस्टियोआर्थराइटिस : परिभाषा एवं इलाज

ऑस्टियोआर्थराइटिस रूमेटॉयड की दूसरी सबसे आम समस्या है, जो भारत में 40 प्रतिशत आबादी को अपना शिकार बनाए हुए है। यह एक प्रकार की गठिया (अर्थराइटिस) की समस्या है, जो एक या ज्यादा जोड़ों के कार्टिलेज के डैमेज होने के कारण होती है। कार्टिलेज प्रोटीन जैसा एक तत्व है जो जोड़ों के बीच कुशन का काम करते हैं। हालांकि, ऑस्टियोआर्थराइटिस किसी भी जोड़ को प्रभावित कर सकता है, लेकिन आमतौर पर यह हाथों, घुटनों, कूल्हों और रीढ़ के जोड़ों को प्रभावित करता है। यह समस्या जोड़ों में दर्द को पैदा करता है और समय के साथ यह दर्द तीव्र होता जाता है। यह समस्या आमतौर पर हड्डियों और जोड़ों का बचाव करने वाले कार्टिलेज के डैमेज होने से होती है। आज के दौर में यह समस्या बहुत ही आम और खतरनाक हो गई है, जो उम्र के साथ गंभीर होती जाती है। ऑस्टियोआर्थराइटिस शरीर के जोड़ों को खराब कर देती है, जैसे हाथ और उंगलियां, घुटने, कूल्हा, पीठ का निचला हिस्सा और गर्दन आदि। दुर्भाग्य से यह समस्या चिंता व डिप्रेशन का कारण भी बन सकती है। गाजियाबाद स्थित सेंटर फॉर नी एंड हिप केयर के वरिष्ठ प्रत्यारोपण सर्जन डॉ. अखिलेश यादव का कहना है कि पिछले 5 सालों में, जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। हालिया रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 5 सालों में भारत में 35,000 से अधिक टोटल नी रिप्लेसमेंट (टीकेआर) और 3500 से अधिक टोटल हिप रिप्लेसमेंट (टीएचआर) सर्जरी की गईं। आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि, 45-70 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं पर टीकेआर का 75 प्रतिशत से अधिक प्रदर्शन किया गया था। टीकेआर के 33,000 यानी लगभग 97 प्रतिशत मामले ऑस्टियोआर्थराइटिस के थे। इसके अलावा ऑस्टियोआर्थराइटिस से पीड़ित 60 साल से अधिक उम्र की 60 प्रतिशत महिलाएं टोटल हिप रिप्लेसमेंट सर्जरी से गुजर चुकी हैं। सामान्य तौर पर यह समस्या मोटापा, एक्सरसाइज में कमी, चोट आदि से संबंधित है। यह समस्या पीड़ित के जीवन की गुणवत्ता को खराब करती है। इस समस्या का खतरा पुरुषों की तुलना में महिलाओं में 3 गुना ज्यादा होता है, जिसके बाद उन्हें जॉइंट रिप्लेसमेंट कराना पड़ता है।

ऑस्टियोआर्थराइटिस कैसे विकसित होता है?

ऑस्टियोआर्थराइटिस के सामान्य लक्षणों में जोड़ों में दर्द, जकडन, झनझनाहट, कम लचीलापन, हड्डियों में घिसाव व टूटने का एहसास होना, सूजन आदि शामिल हैं। इस खतरनाक समस्या के 5 चरण होते हैं, इसलिए सही समय पर समस्या की रोकथाम करना आवश्यक है, जिससे इसे चौथे चरण में जाने से रोका जा सके। ऑस्टियोआर्थराइटिस से पीड़ित 25 फीसदी लोग दिनचर्या के काम करने में सक्षम नहीं रहते हैं।

स्टेज 0 (नॉर्मल) : इस स्टेज में किसी प्रकार के कोई लक्षण नहीं नजर आते हैं।

स्टेज 1 (माइनर) : इस स्टेज में जोड़ों में हल्की समस्या का अनुभव हो सकता है, लेकिन किसी प्रकार के दर्द या असहजता का अनुभव नहीं होता है।

स्टेज 2 (माइल्ड) : एक्स-रे द्वारा किए गए डायग्नोसिस से हेल्दी कार्टिलेज के साथ बढ़ी हुई हड्डी का पता चलता है। हालांकि, इस स्टेज में कई पीड़ितों को ज्यादा चलने या दौडने पर दर्द या जकडन जैसा महसूस होता है।

स्टेज 3 (मॉडरेट) : इस स्टेज में, हड्डियों के बीच के कार्टलेज में डैमेज दिखाई देने लगता है और हड्डियों के बीच मौजूद जगह कम होने लगती है। स्टेज 3 वाले घुटनों के मरीजों को चलने, दौड़ने और झुकने के दौरान बार-बार दर्द का अनुभव होने लगता है। उन्हें ज्यादा देर बैठने या सुबह उठने के बाद जोड़ों में जकड़ने का अनुभव होता है। ज्यादा काम करने के बाद उनके जोड़ों में सूजन की समस्या होती है।

स्टेज 4 (गंभीर) : इस स्टेज में, घुटनों के मरीजों को चलते वक्तया मूवमेंट के दौरान तीव्र दर्द और असहजता महसूस होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनकी हड्डियों के बीच मौजूद जगह खत्म हो जाती है, जिससे कार्टिलेज लगभग पूरी तरह घिस जाता है। ऐसे में मरीज के जोड़ों में अधिक जकड़ने हड्डियों के घिसने आदि की समस्याएं होती हैं। स्टेज 4 वाले मरीजों की हालत गंभीर हो जाती है, जिसके बाद उन्हें दिनचर्या के सामान्य कामों को भी करने में समस्या होती है।

ऑस्टियोआर्थराइटिस का इलाज : डॉ. अखिलेश यादव के अनुसार यदि समस्या का निदान शुरूआती चरणों (0-2 चरण) में हो जाता है, तो मरीजों को किसी खास इलाज की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इस दौरान समस्या को केवल एक्सरसाइज और फिजिकल थेरेपी से ठीक किया जा सकता है। इस प्रकार की थेरेपी में किसी प्रकार के मेडिकेशन की आवश्यकता नहीं होती है।

मेडिकेशन : यदि दर्द को केवल एक्सरसाइज की मदद से ठीक नहीं किया जा सकता है, तो उस केस में जोड़ों में असहजता को दवाइयों यानी कि मेडिकेशन की मदद से कम करने की कोशिश की जाती है। यदि आपको समस्या ज्यादा हो रही है, तो डॉक्टर आपको सप्लीमेंट्स के अलावा ओटीसी पेन किलर दवाइयां और पेन रिलीफ थेरेपी की सलाह दे सकता है। सामान्य तौर पर स्टेज 3 की स्थिति में मरीज मेडिकेशन की मदद से ठीक हो सकता है।

सर्जरी : स्टेज 4 में यदि आपके जोड़ों की समस्या बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, तो ऐसे में डॉक्टर के पास सर्जरी के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचता है। फुल नी रिप्लेसमेंट, अर्थराइटिस की समस्या के इलाज का सबसे लोकप्रिय विकल्प माना जाता है। इसकी जरूरत तभी पड़ती है, जब तीनों कंपार्टमेंट प्रभावित हो चुके होते हैं।

मिनिमली इनवेसिव टोटल नी रिप्लेसमेंट : डॉ.अखिलेश यादव के अनुसार टोटल नी रिप्लेसमेंट के क्षेत्र में प्रगति के साथ मिनिमली इनवेसिव प्रक्रिया की मदद से न सिर्फ सही समय पर निदान संभव है, बल्कि सफल इलाज भी संभव है। यह कंप्युटर एसिस्टेड रोबोटिक तकनीक है, जिसकी मदद से सर्जरी के बाद मरीज बहुत जल्दी रिकवर करता है और उसका जीवन भी बेहतर हो जाता है। आज, सर्जरी का उपयोग पूरी विशेषज्ञता के साथ किया जाता है, जहां मरीज को दर्द न के बराबर होता है और अस्पताल से कम समय में ही डिस्चार्ज कर दिया जाता है।

पार्शियल नी रिप्लेसमेंट : पार्शियल नी रिप्लेसमेंट जैसी नई तकनीकें और एलॉय इंप्लांट पुराने की तुलना में बहुत बेहतर हो गए हैं। ये इंप्लांट लंबे समय तक चलते हैं, जिससे मरीजों को इंप्लांट बार-बार बदलवाना नहीं पड़ता है। पहले नी रिप्लेसमेंट बुजुर्ग मरीजों की जरूरत के हिसाब से उपलब्ध होते थे, लेकिन आज टेक्नोलॉजी में प्रगति के साथ इंप्लांट की उपलब्धता के साथ युवा भी इस तकनीक का लाभ उठा सकते हैं। पार्शियल नी रिप्सेमेंट का खास फायदा यह है कि यह एसीएल का बचाव करता है, जो मूवमेंट और जोड़ों के बचाव के लिए जिम्मेदार एक अहम लिगामेंट होता है। जबकी टोटल नी रिप्लेसमेंट सर्जरी में एसीएल को हटाना पड़ता है। चूंकि, इसमें एक छोटे से चीरे के साथ काम बन जाता है, इसलिए मरीज सर्जरी के बाद जल्दी रिकवर करते हैं और जल्द ही अपने सामान्य जीवन को शुरू कर पाते हैं। इस प्रक्रिया में लीगामेंट को ठीक से सेट किया जाता है, इसलिए मरीजों को ऐसा बिल्कुल महसूस नहीं होता है कि उनके प्राकृतिक घुटने को इंप्लांट के साथ बदला गया है। सभी मरीज पूरी तरह से सामान्य महसूस करते हैं।

उमेश कुमार सिंह

20वां सिंधल राठौड़ प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

जालोर जिले के आहोर के निकट स्थित पांचोटा गांव में प्रतिवर्ष की भांति बसंत पंचमी के अवसर पर 20वां सिंधल राठौड़ प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। पांचोटा स्थित नागणेची माता मंदिर परिसर में श्री नागणेची माता मंदिर प्रबंध समिति तथा श्री नागणेची माता शिक्षण एवं सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में सत्र 2018-19 के दौरान 10वीं, 12वीं व इससे ऊपर की कक्षाओं में 60 प्रतिशत से अधिक लाने वाले विद्यार्थियों, राजकीय नौकरियों में नवचयनित समाज बंधुओं एवं समाज के काम में सक्रिय सहयोग करने वाले समाज बंधुओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष रविन्द्रसिंह बालावत, कंवला महंत हरिपुरी महाराज, सब इंस्पेक्टर निर्मल राठौड़, शिक्षा समिति के अध्यक्ष लालसिंह धानपुर, मंदिर प्रबंधन समिति के अध्यक्ष माधोसिंह उखरड़ा आदि अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

गणतंत्र दिवस पर सम्मानित

गणतंत्र दिवस पर अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित होने वालों में अनेक समाज बंधुओं ने अपना स्थान बनाया है। राज्य कर अधिकारी लक्ष्मणसिंह जसोल को करावंचन से संबंधित महत्वपूर्ण मामलों में प्रभावी कार्यवाही कर 600 करोड़ से अधिक राजस्व संग्रहण में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए सम्मानित किया गया। इसी प्रकार लेफ्टिनेंट जनरल दिलीपसिंह चांपावत वी.एस.एम., डी.जी.एस.ओ. निवासी हरसोलाव जिला नागौर को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति महोदय द्वारा परम विशिष्ट सेवा मैडल से सम्मानित किया गया। सांचौर के विरोल निवासी भगवानसिंह को बी.एल.ओ. के रूप में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए जिला कलक्टर जालोर द्वारा सम्मानित किया गया। इसी प्रकार सांचौर के कारोला निवासी कृषि पर्यवेक्षक देवेन्द्रसिंह चौहान को भी जिला कलक्टर जालोर द्वारा उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। सीकर जिले के बरसिंहपुरा निवासी मूलसिंह तंवर को श्री कल्याण चिकित्सालय में मरीजों की उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मानित किया गया। इसी प्रकार निम्बाहेड़ा के दिलीप कुमार सिंह को समाजसेवा के लिए चित्तौड़गढ़ जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया। इस प्रकार अनेक समाज बंधुओं को विभिन्न स्तरों पर सम्मानित करने के समाचार है। सभी को पथप्रेरक परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई।

पटवारी व कांस्टेबल टेस्ट सीरिज जारी

राज्य सरकार द्वारा पटवारी एवं कांस्टेबल की भर्ती हेतु परीक्षा की तैयारी में सहयोग हेतु श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में समाज बंधुओं के सहयोग से प्रारम्भ की गई टेस्ट सीरिज लगातार जारी है। बाड़मेर से प्रारम्भ हुई यह टेस्ट सीरिज नागौर, बीकानेर, चुरू, सीकर, जैसलमेर आदि जिलों में 9 फरवरी तक 23 केन्द्रों पर आयोजित की जा चुकी है। अभी तक 4 टेस्ट हो चुके हैं। 8 टेस्ट की शृंखला में 4 टेस्ट अभी बाकी है। इस बीच नए केन्द्र जुड़ते जा रहे है। नए केन्द्रों पर पूर्व में हो चुके टेस्ट बाद में करवाएं जाएंगे।

मदनसिंह सोलंकियातला को स्वर्ण पदक

संघ के स्वयंसेवक एवं युवा साहित्यकार मदनसिंह सोलंकियातला को राजस्थानी में स्नातकोत्तर परीक्षा में प्रथम आने पर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के कुलपति द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया गया है। मदनसिंह पीएचडी 2019 में 95.71 प्रतिशत अंकों के साथ चयनित हुए है वे वर्तमान में राजस्थान शिक्षा विभाग में व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं।

कार्तिकी सिंह का भारतीय टीम में चयन

बड़ी सादड़ी के निकट बोहेड़ा गांव की निवासी कार्तिकी सिंह शक्तावत का चयन मार्च में होने वाले निशानेबाजी विश्वकप के लिए भारतीय टीम में हुआ है। कार्तिकी सिंह ने दिल्ली में शूटिंग ट्रायल के दौरान शॉटगन निशानेबाजी में जूनियर वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल किया है। इससे पूर्व कतर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल किया है।

संपर्क एवं संवाद जारी

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के संदेश को समाज के लोगों तक पहुंचाकर उनसे संवाद कायम करने का क्रम जारी है। 2 फरवरी को संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के नेतृत्व में जोधपुर के डिगाड़ी क्षेत्र में एक बैठक का आयोजन किया गया। इसी प्रकार पोकरण, फलोदी टीम ने फलसूंड क्षेत्र के ऊमसिंह की ढाणी, नगसिंह की ढाणी, लखसिंह की ढाणी, रावतपुरा आदि गांवों में सम्पर्क कर संवाद साधा।

राजीवसिंह शेखावत की शहादत

जयपुर में विराट नगर के निकट स्थित गांव लुहाकना खुर्द के नायक राजीवसिंह शेखावत 9 फरवरी को जम्मू कश्मीर के पूंछ में नियंत्रण रेखा पर आतंकियों से संघर्ष में अपने साथियों का बचाव करते हुए शहीद हो गए। पथप्रेरक परिवार उनकी शहादत को नमन करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिवार को इस आघात से उबरने की शक्ति प्रदान करें।

शिविर सूचना

दिनांक 07 से 10 मार्च 2020 तक आलोक आश्रम, गेहुं रोड, बाड़मेर में संघ का एक **दम्पति शिविर** आयोजित किया जा रहा है। शिविर में आने वाले अपने संभाग प्रमुख के माध्यम से 29 फरवरी तक शिविर कार्यालय को सूचना देवें।

कालेवा बंधुओं के दादीसा का देहावसान

श्रीमती कंवरो कंवर

संघ के स्वयंसेवक सोहनसिंह, बलवंतसिंह कालेवा की दादीसा **श्रीमती कंवरो कंवर** का 30 जनवरी को देहावसान हो गया। परमेश्वर दिवगंत आत्मा को चिरशांति प्रदान करें।

तनसिंह चौहान का देहावसान

तनसिंह चौहान

बाड़मेर के जूना गांव के निवासी एवं बाड़मेर में सभी प्रकार के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए व जरूरतमंद की सहायता के लिए मुक्त हस्त सहयोग करने वाले **तनसिंह चौहान** का 28 जनवरी को देहावसान हो गया। लंबे समय से बीमार चल रहे तनसिंह ने प्रारंभिक शिक्षा के बाद ड्राईवर से अपना जीवन सफर प्रारंभ किया एवं कालांतर में अपनी मेहनत व सूझबूझ से बाड़मेर के बड़े उद्यमी बन गए। उनके निधन पर समूचे क्षेत्र में शोक की लहर छा गई। परमेश्वर इन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

हार्दिक श्रद्धांजलि

जन्म :
15.04.1963

देहावसन :
28.01.2020

स्व. श्री तनसिंह चौहान

एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर, सामान्य मजदूर के रूप में अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ कर, सम्पूर्ण मारवाड़ में एक सफल उद्यमी के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने वाले तथा सभी जाति वर्ग के जरूरतमंदों के सहयोगी के रूप में प्रतिष्ठा बना कर क्षेत्र के सभी सामाजिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक कार्यों में भागीदारी निभाने वालेश्रद्धेय तनसिंह चौहान को हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रद्धानवत : रघुवीरसिंह तामलोर, ठा. रिड़मल सिंह भाटी **(गौरड़िया)**, तनवीरसिंह फोगेरा, महेन्द्रसिंह तारातरा, नरेशपालसिंह तेजमालता, नेपालसिंह तिबनियार, श्यामसिंह सिसोदिया **(बायतु)**, नरपतसिंह दूधवा, हड़वंतसिंह जालीला, प्रवीणसिंह सिणधरी, माइल स्टोन एकेडमी **(बाड़मेर)**, आजादसिंह शिवकर, विरमसिंह थोब, गणपतसिंह गोलिया, रतनसिंह व्याख्यता **(लुणु)**, नरेन्द्रसिंह सिणेर।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org